॥ श्रीनाथजी ॥

श्रीकल्याणरायजी के मंदिर के लेखोंका नकशा

संख्या	स्थान	श्लोकादि	लेख	वृत्तान्त
१	श्रीजीके निजमंदिरका मध्यद्वारपर	नाम	॥ श्रीकल्याणरायो जयति ॥	
२	जलधानकी तिवारीके तरफका द्वारपर	श्लोक गीताको	यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्	१
३	डोलतिवारीके तरफका द्वारपर	श्लोक भागवतको	एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान्स्वयम् इन्द्रारिव्याकुलं लोकं मृडयन्ति युगे युगे	१
४	जगमोहनकी तिवारीके भीतर द्वारपर	दोहा	सीतापति रघुनाथजी तुम लग मेरी दौर जैसे काग जिहाजके दीसत और न ठौर १	
५	जगमोहनकी तिवारीके उत्तरभित्तिपर	श्लोक पद्मपुराणके	नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदये न हि मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद	१
६	जगमोहनकी पूर्वभित्तिपर	श्लोक भागवतको	यदि रासीश मे कामान्वरांस्त्वं वरदर्षभ कामानां हृद्यसंरोहं भवतस्तु वृणे वरम्	१

Pt Shri Gattulalaji Research Center
www.vallabhacharyakrupa.org
www.vallabhacharya-agrahara.org

७	जगमोहन की पूर्व भित्ति पर	बधाई की तुक	रूप वंश कौं कियो सनाथे नगधर देखो पी नाथे
८	जगमोहन की तिबारी पर	सामवेद को मंत्र	हरिः ॐ प्रभुक्तवैवस्वतिमार्कण्डा ह मम्यां प्रस्तर मम्यां धातु मम्यां पूर्णं दैवतामामा वाहये दर्शये त्रिवेदये तन्निवे दिशे मम्भं भुंजीयात् मम्से तद्धं सोऽश्नुते समी नजोगानहे जयापश्रुतिर्श्रीहवर्चसेनसुवर्गैणलोकेन २
९	रायचौक की रोसपर	नाम	जन्माष्टमी रीस
१०	रायचौक की पश्चिम भित्ति पर	श्लोक भागवत को	कृष्णमेवत्तजो कोऽर्थं वद वी नितरामपि येब संतं नविदुर्हीरं मी मादृशो बुधं २
११	=	नाम	हाउपोल
१२	=	श्लोक	एकं शास्त्रं देवकीपुत्रगीतमेको देवो देवकीपुत्र एव मंत्रोऽप्येकस्तस्य नामानि यानि कर्माप्येकं तस्य देवस्य सेवा २
१३	=	श्लोक	पुण्यस्य फलमिच्छंति पुण्यं नेच्छंति मानवाः नपापफलमिच्छंति पापं कुर्वंति यत्नतः २
१४	=	श्लोक कलल दीपको	धनं सर्वात्मना त्याज्यं तच्चेत्त्यक्तुं न शक्यते कृष्णार्थं तत्प्रयुंजीत कृष्णोऽनर्थनिवारकः २
१५	रायचौक की दक्षिण भित्ति पर छतनपाने की नदी पर	दोहा	बकरी पाती खात है ताकी काढत खाल जो बकरे कौं खात है ताको कौन हवाल २
१६	=	चौपाई रामायण की	जिमि कुपंथ पग देत खगेशा रहै न तेज बल बुधि लवलेशा

Pt Shri Gattulalaji Research Center
www.vallabhacharyakrupa.org
www.vallabhacharyaagrahara.org

३

१७	=	नाम	राचचौक
१८	=	दोहा	पत्रांही लिखिया दूधैं या घर केवकुंपास निजप्रति पूज्यों ही रहै श्रानन श्रीपुनजास १
१९	=	दोहा	वैद रोगीजन रुग जो गीस्तू रघी गीया व की मियागर जीक मांगे तिनै को पतिधार १
२०	=	निबंधकी पंक्ति	पाखंडमतस्वीकारमहत्वापथात्रात्वनिद्धोत्रादिकं कुर्वन् सदा कृष्णं जनजन जयति जगवकुले नैव मार्गेऽ तत्तो मुख्याप्य मीमांसावालकर्तज्ञगवज्जनाज्ञ तथात:किंतु कर्थंचित्कलिंतरिष्पति कलिदी भाविनूलोनजयती त्यर्थः
२१	विष्णुनिवासका द्वार पर	नाम	इंद्रद्वार
२२	=	नाम	नारदद्वार
२३	=	नाम	विष्णुनिवास
२४	=	नाम	शिवद्वार
२५	=	नाम	ब्रह्मद्वार
२६	विष्णुनिवासके भीतर	नाम	श्रीनाथोजयतितराम्
२७	चित्रोंपर	नाम	श्रीनवनीतप्रियोजयति
२८	=	नाम	श्रीमथुराधीशोजयति
२९	=	नाम	श्रीकल्याणरायोजयति

Pt Shri Gattulalaji Research Center
www.vallabhacharyakrupa.org
www.vallabhacharya-agrahara.org

३०	=	नाम	श्री नरसगोपालो जयति
३१	चित्रभित्ता मकपश्चि मभितिपर	प्रशस्ति की छप्पै	श्रीहितबरसिंहदारसिंह सुतलछमिनारायन तिहिसुत गोपीनाथ ताहिसुत विष्णुदास गन नहिचित में धरि बाहबाहबहसिक करायो कृष्णनजीगसु बाहचेचो आनि दरसायो नवसीं करि विष्णुप्रिय कृष्ण दसदनसु हावनों नेटकिये श्रेष्ठकृतिसंतजासुलखि नयविष्णुनिवास सुनामदिये १ संवत् सैती सत्रगनी सें पर आन चोथसुजुक बुध था दश्री जयकवि सत्यपरवान १
३२	=	दोहा	अश्रनिकु लिश्रनिर्घोलपविबश्रमिकुरसो आद्रि परे बुरे के सीसपर विद्रमकरै रसमांहि १
३३	=	दोहा	तनुश्रीर विस्तारतनु तनु तनु तम तनुतात तनुविरलै याजगतमें आनत है रसजात १
३४	राजचौक की पूर्वभित्ति पर	तुक	गोकुलनाथ राखलै हो हरि अवसर अवसर बात नसुखकै हो
३५	विष्णुनिवास कापि त्रकै नीचें	श्लोक	दक्षिणे नकरेणसौम्य श्री हस्तमर्मासिनः वामं करं स्तुष्ट त्यनि कृतिपरूपचातुरीम् १
३६	=	श्लोक	चिंताधकूपपतितं कालव्यालमुखेगतं कोमांत्रातुं क्षमः श्रीमन्नवनीतप्रियं विना १
३७	=	श्लोक	संसारसागरे मग्नं कालव्यालमुखेगतं विनाश्रीमथुराधीशं कोमांत्रातुं क्षमः प्रभुः १
३८	=	तुक	विषकितजखिरहीरैन हो तहैनजीर नागरनटनिरखिजयो चंद्रमाचकोर २
३९	=	तुक	नीकीनैनमुसकिछबियाहै सहछबि श्रवि मैकहोकहां है
४०	राजचौक की पूर्वभित्ति पर	दोहा	आपकुंड गोलकपिसापितपिताकानीन लखोमुनागरनक्ति अराफांडवनि त्वनवीन १

Pt Shri Gattulalaji Research Center
www.vallabhacharyakrupa.org
www.vallabhacharya-agrahara.org

४१	=	श्लोक	धातुवादे तथा द्यूते यक्षिणीमंत्रसाधने अंजने योगसिद्धौ च दैवे स्वेमतिर्नवैत् १
४२	=	तुक	जगकद करामातकी खांन महाप्रभु पतितनकोमतिजान
४३	=	श्लोक	श्रीगोवर्धननाथपादयुगलं हैयंगवीनप्रियं नित्यं श्रीमथुराधिपं सुखकरं श्रीविठ्ठलेशं मुदा श्रीमद्द्वारवतीश गोकुलपतिं श्रीगोकुलेंदुं प्रभुं श्रीमन्मन्मथमोहनं नटवरं श्रीबालकृष्णं भजे १
४४	=	श्लोक	यदा यदि मुखाम्बुजं न विषयकर्षं च न तदा कलिजबादस्मादेहचिन्तादयो युत १ सर्वथा न द्रुधियंपति पुष्पानितिमलिर्मम न लौकिकः प्रभुः सद्वरोमनुते नैव लौकिकं २ भावस्तत्राप्यस्मदीयः सर्वस्वश्चैहिकश्च सः परलोकश्च तेनायं सर्वभावेन सर्वथा ३ सेव्यः स एव गोपीशो विधास्यत्यखिलं हि नः श्रीमहाप्रभुजी नें श्रमुरक्षा मोहिनी लीला समय श्रीगोपीनाथजी श्रीविठ्ठलनाथजी प्रति शिक्षा के आज्ञा किये सो श्लोक ॥ ये शिक्षा के श्लोक वैष्णव नित्य मनन करे ५ ॥
४५	=	दोहा	जाचे जैसी वस्तु कें तैसो दीमन होय मालाप्रोर गिलोल कौं कर लेदेखो कोय १
४६	=	श्लोक	श्रीमद्वल्लभविठ्ठलौ गिरिधरं गोविंदरायं तथा बालंकृष्णमथापि गोकुलपतिं नाथं रघूणामपि श्रीमंतं यदुनाथसंज्ञिकमथो वंदे घनश्यामकं तत्पुत्रप्रवरांश्च तत्सुतवरान् सर्वांस्तदीयानतः १
४७	=	वंशावली	श्रीमहाप्रभु वल्लभ प्रकटे तिनसुत विठ्ठलनाथ जिनके गिरिधरजी प्रकटे उनके गोपीनाथ श्रीप्रभुजी जिनके जये फिर रनछोड़ सुजान उनके जीवनजी नये विठ्ठलनाथ प्रमान उनसुत वल्लभजी भये फिर श्रीविठ्ठलनाथ करि किरपा कलिमहीमो प्रकट किये सनाथ जिनके सुत रनछोड़जी हैं वर नागिरधोर इनकी वंश बधे यह आशिष करे करजोर १
४८	गोवर्धन पोलमे	पदो	स्वामी मिमन सैवहि
४९	=	पदो	का भाषितेहि वस्त्रादौ सेया नरगोमिआयते
५०	=	दोहा	नागर होइ सगजी का पायरखा कर रूढ सर्व खुशाअदासों जहां चलतामदरूप १

५१	=	कलिमहिमा	अब संचेहि कलिजुग आयो पुत्र पिता की कह्यो न मानत करत अपमान आयो कन्या बेचत सरम न उपजत द्विज दिन सील सवायो तातैं बर्षो अल्प होत है पाप दिये कलिजुग छायो मथुरा कटत कटत है द्वारका जमुना कर रक बहायो इतनै दुख देखन के कारन काहे कूं आस जिवायो १
५२	=	तुक	मृगन के सेस मृगनैनी नसों हसियत बक के बिगार कह्यो मराल मारियत
५३	=	दोहा	नित नित दुख मह मैं सहे जहां अमिट उत्पात रोग सिवतन त्यागियै घर की कितीक बात १
५४	=	तुक	यद्यपि हमारे पीवर हत हमे शघर तद्यपि तिहारे दुख मोहि आन घेरो री
५५	कुंजमहल की नीत ५	नाम	कुंजमहल
५६	कुंजमहल की नीचे	सोरठा	कुंजमहल जग धाम राय चौक के बीच में शोभा को अभिराम भेट कियो रघुनाथ नृप सं. १९५० का फागुन सुद १४
५७	गोवर्धन पोल की तिवारी पे	=	जफर अरदुमि उसको मजानि थेगा गोवी कै साहो साहब फैम जुवा जिसे औरा मैं था दरबुदान रहै जिसे ते रामैं खोफ सुदानक आ ५
५८	=	नाम	गोवर्धन पोल
५९	=	तुक	सुनियो रे वलिराजा बसुधा का कृ कीनी नई
६०	गोवर्धन पोल की तिवारी का द्वारपर	तुक	वेढि कै दर पे तेरे अब हम किस के दर पैं जायगें हम तेरे कहलाकै अब क्या गैर के कहलायगे
६१	पोल का हाथि जोप र	नाम	नीतिरीति

Pt.Shri Gattulalaji Research Center
www.vallabhacharyarupa.org
www.vallabhacharya-agrahara.org

६२	गोवर्धन पोलमें	तुक	नित्य नई प्राचीन नई
६३	सिंहपोल में	श्लोक	पादांगदादि मंजीरनासिकाञ्चभल्लजनैः स्वर्णकर्णदरिं बील्वशाखाः शंकाकलंकितः १
६४	पोलकाऊपर	नाम	सिंहपोल
६५	गलीमें	नाम	रंगीलीगली
६६	=	नाम	रत्नजकारी
६७	=	तुक	गोकुलराजलिखारा चकुंवा वकुंवारा रमजीलवाजै
६८	=	मंत्र	तावांवास्तव्यस्मसिगमध्येयत्रगावीभूरिशृंगा अयासः
६९	=	नाम	रसिकनवन
७०	दोहा	रसिकजवनकेऊपर	श्रीजीकेघारेरच्यो रसिकजवनयहधाम बडेमहलरूपध्यानकी तखतकुवरिजिहिनाम १
७१	गलीमें	नाम	छबीलीगली
७२	पोलपर	नाम	सिरेपोल
७३	रसिकगोपालजीकामंदिरपर	तुक	रसिकगोपालजुनतखभवपजत आगमनिगमप्रकार
७४	शालाकाद्वारपर	नाम	अग्निहोत्रशाला

आलाकी सिलिपर ७५	श्लोक =	श्लोक	अग्निहोत्रंतथादर्शपौर्णमासौपशुस्तथा चातुर्मास्यानिसोमश्चक्रमात्त्वंचविधीहरिः १
७६	=	मंत्र	यज्ञेनयज्ञमयजंतदेवास्तानिधर्माणिप्रथमान्यासन्
७७	गलीमें	नाम	दीक्षितशुवसिंहासनम्
७८	=	तुक	रसरासआसकोंकादिलचूरचूरहै
७९	=	तुक	नलनगुफांलजूकेतिलमुखचंदपैचकोरहैमेतेरेहै
८०	छबीलीगलीमें	श्लोक	सुरतेचसमाधौचमनोयत्रनलीयते किंतेनसुरतेनैवकिंतेनचसमाधिना १
८१	अग्निहोत्र आलाको चारपर	नाम	श्रीवैश्वानरोजयति
८२	=	नाम	श्रीयज्ञमयोविष्णुर्जयति
८३	=	नाम	श्रीयज्ञपुरुषोजयति
८४	द्वार	नाम	श्रीनाथजीकीमोडी
संख्या ८५	यज्ञालय द्वार	तुक	गुरुकोंकृपातेमाउमअयमस्तजोमरखी इसदीगलीमेंजातमतलवत्रितावहोगा।
८६	श्रीवल्लभ गोपालजी कीनालक तिलिपर	श्लोक	मांधाताचमहीपतिःकृतयुगेलंकारभूतोगतः सेतुर्येनमहोदधौविरचितःक्वासौदशास्यांतकः अन्येचापियुधिष्ठिरप्रभृतयस्तेचापिस्वर्गंगताः नैकेनापिसमंगतावसुमतीमुंजत्वयायास्यति १

८७	सामानकी बुरजकी तिवर	पद	हरिविमुखन के संग तें जली शीच की मेर जनपै कहा कछे आवठत है वहांन की आश्रीर असिएकांतस्थल ॥ नंदमयगुण तीनतिर्वंध तिहिमें कि निश्चिंत वैठिये परमामामुखमुंद नमनको दुखदूरहोय जहांपरमचैन रसद्रवै नागरन्मारे वे वजगृसों चितग्रत औरलगद्यै १
८८	जलबुरज कीतिलिपर	मंत्र	तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात् स एको मानुष आनन्दः ते ये शतं मानुषा आनन्दाः स एको मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ते ये शतं मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः स एको देवगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ते ये शतं देवगन्धर्वाणामानन्दाः स एकः पितॄणां चिरलोकलोकानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ते ये शतं पितॄणां चिरलोकलोकानामानन्दाः स एक आजानजानां देवानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ते ये शतमाजानजानां देवानामानन्दाः स एकः कर्मदेवानां देवानामानन्दः ये कर्मणा देवानपियन्ति श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ते ये शतं कर्मदेवानां देवानामानन्दाः स एको देवानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ते ये शतं देवानामानन्दाः स एक इन्द्रस्यानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ते ये शतमिन्द्रस्यानन्दाः स एको बृहस्पतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ते ये शतं बृहस्पतेरानन्दाः स एकः प्रजापतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ते ये शतं प्रजापतेरानन्दाः स एको ब्रह्मण आनन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ ॥
८९	छबीलीग काचकत राघरजीत पर	दोहा.	वहन पुरुष के संगते मोहि भये जे ज्ञान नपनवान संगयवृ मैं लिजसी रहजान १ ब्रह्मा गोरीनाथ श्यामान दीक्षित यजुर्वेद के जान उगाता शंकर को मान दीक्षित सामवेद के जान २ होता लक्ष्मण भट ऋग्वेद सोमनाथ अध्वर्यु भेजेद पाठक सहस्र ऋषी दुनको है यजुवेद कोपंडित यहै ३ ब्राह्मणछंसी सीताराम भट ऋग्वेद पंडित अचिराम प्रस्तोता भट गोपीनाथ वाजपेयी सामवेद विख्यात ४ मैत्रावरुण है राजाराम ऋग्वेदी दीक्षित अचिराम प्रतिप्रस्थाता काशीनाथ पाठक सहस्र ऋषी सरसात ५ सोमनाथ केयहल घुशात यजुर्वेद पाठीक हलात आग्नीध्र विश्वनाथ सुजान यजुर्वेद वाजपेयी कहान ६ प्रतिहर्ता जहांहै जुगनेश सामवेद त्रिवाडि सुवेश अच्छावाक भट बेनीराम है चौक जे ऋग्वेद सुधाम ७ उन्नेता भट गोलानाथ यजुर्वेदी दीक्षित सरसात पोता बालकृष्ण भट सुंदर ऋग्वेदी बरणी मेघंबर ८ सुब्रह्मण्य त्रिवरामजु सोहै दीक्षित सामवेद की ओहै ग्रावस्तुत स्वामी किशन जान ऋग्वेदी कृष्णदत्त सुज्ञान ९ नेष्टा कन्हैयालाल ऋग्वेद सोरहवर नीको यहुजेद यह वरनीको वेद सुजान कवि घनश्याम करै गुनगान १० ॥ ॥

संख्या	स्थान	श्लोकादि	लेख
			॥श्री नटवरगोपालो जयति॥ श्री नटवरगोपालजी के मंदिर के लेखों का नकशा
१	श्री नटवरगोपालजी के निजमंदिर का द्वार पर	तुक	मणिमय मंदिर नटवर सोहै जूं रवि शशि जगमगा कीं कोहै जूं
२	[illegible] मंदिर पर	श्लोक	रसना रसना रसिकं पात्रं नाम नित नमन्तरं संकर्तुं एक तन्त्रानन मुन्नत मेकतदूहदरूपतेसवैः २
३	रूपकुंज के द्वार पर	तुक	बोलिया न बोल मेरी सुनयो न सुन में तो लोहि कीं नछांडोंगी रे सांवरे
४	मध्यद्वार पर	नाम	रूपकुंज
५	तृतीय द्वार पर	दोहा सोरठा	नागधर रतिलन कारणे उपजी मन में नीति रूपकुंज रचि कौतुक घर हस मावलि कर प्रीति १ रूपकुंजो यह रस्या निजनवधा यो नृपज्यान की [illegible] कुवरि मदा विधि लिखि निधि सहल से खाव लमु १ सं. १९५२ चैत्र सुद १३ बुध
६	पुस्तकों की अलमारी पर	पंक्ति संस्कृत की	निबंधोक्त निर्णय ग्रन्थानां पुस्तकालयः १
७	द्वार पर	तुक	मोहन की मुख सोहन जोहन जोग रूप अखिल जन कीं नस्मक रोग २
८	पुस्तकों की अलमारी पर	श्लोक	विचार्य वल्लभाचार्य ग्रन्थार्थ मनमार्थिका निवार्य संशयं कार्य मनार्य मतदूषणम् २
९	मंदिर का सिंहद्वार	दोहा	जगपीठ मे में करत कौं अपनों जस वे काम विश्वजनरन गुवान को दुथा करत जग नाम २
१०	दूसरा सिंहद्वार	दोहा	याको घर सब बसे बडो सब घर इहि आधीन सो घर पर हरि फिरत क्यों घर घर कै कैं दीन ३

११	मंदिर के द्वार पर	मंत्र	रसो वै सः रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति
१२	=	दोहा	कहत कहत कहाँ लगि कहै अब कवि छवि अति राम प्रिया कमल पद पर सहित धरो मन श्याम १
१३	=	नाम	प्रमेय
१४	पश्चिम भित्ति पर वेदों की जगह	नाम	प्रमाण
१५	मंत्र रूप वेद को	=	आदौ यद्दारु प्लवते सिंधोः पारे अपूरुषं तदारभस्व दुर्हणो तेन गच्छ परस्तरमिति १
१६	=	श्लोक भागवत को	वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः वेदो नारायणः साक्षात्स्वयंभूरिति शुश्रुमः १
१७	=	वेदों का चित्र कागज	(सामवेद) (यजुर्वेद) (ऋग्वेद) (अथर्ववेद)
१८	ब्रह्माजी का हृदय पर	नाम	वेदप्रसूर्जयति
१९	पूर्व भित्ति पर	दोहा	गिरि तें ऊंचे रसिक मन बूडे जहां हजार वहै सदा पसु नरन को प्रेम पयोधि पगार १
२०	=	महावाक्य	प्रज्ञानमानन्दं ब्रह्म) अहं ब्रह्मास्मि) तत्त्वमसि) अयमात्मा ब्रह्मेति)
२१	=	श्रुति	यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः
२२	=	तुक	सर्वस के शिर धर रहे सर्वस की ब्रजधूर
२३	=	तुक	हरि प्रेम माल रस जाल के नागरिदास सुमेर जे
२४	दक्षिण भित्ति पर	श्लोक	तव चित्त स्मितिश्वासः श्रीगोपीजनवल्लभे यदा तदा स्वतार्थः स्तोत्रनीयो न कर्हिचित् १

२५	श्रीबल्लभ गोपालजी को बारूपर	नाम	लालपडदो
२६	=	दोहा	मनतु कंचीगैरलगजहांनपहोंचैश्रीर जहांबैठेमीचीलगेकंचीकंचीगैर १
२७	=	दोहा	सदामनोरथसबकरन मंगलरुहिपदमाथ सदाहमारेपच्छहैश्रीगोपालसहाय १
२८	हृक्षिनी पर	नाम	नक्कलरत्नाधार
२९	=	नाम	दक्षिणदानी
३०	=	नाम	संगीलसदन
३१	=	नाम	बादित्रबाहिनी
३२	मंदिर ऊपर	नाम	छरीमहल
३३	=	सोरठा	कृष्णकुंवरिमहाराणिनृपअवानकीदितियतिया सेखावतिकुलजानियहहुरटेमहलकुरयो
३४	=	=	संवत१९६१ कार्तिक सुदि १५बुधदिने लिखितं ब्राह्मणमथुरादास कृष्णगढमध्ये लेखक ब्राह्मणमथुरादासको आसिर्वादो छावरकि ऽरज

Pt.Shri Gattulalaji Research Center
www.vallabhacharyakrupa.org
www.vallabhacharya-agrahara.org